Research Scholar- Amresh Kumar
Supervisor- Dr. Vivek Dubey
Department- Hindi
Title- BHARTIYA KATHA SAHITYA PAR AADHARIT HINDI FILMON MEN DALIT CHETNA KA ADHYAYAN (VISHESH SANDARBH: DALIT CHETNA PAR AADHARIT MAULIK EVAM ANOODIT KATHA SAHITYA)

Notification No.- 517/2022
Notification Date- 13-07-2022

शोध–सार

हिंदी साहित्य के इतिहास के आधुनिक काल में जिस समय उपन्यास व कहानी जैसी गद्य विधाओं का विकास हो रहा था लगभग उसी समय कला के एक अन्य रूप सिनेमा ने कला की दुनिया में अपनी पहचान बनानी शुरू की। पश्चिमी देशों में उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक तक सिनेमा निर्माण की शुरूआती तकनीक का विकास हो चुका था। बीसवीं सदी के पहले दशक में भारत में भी सिनेमा निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई थी।

तकनीकी विकास के साथ ही सिनेमा के मूक युग की समाप्ति हुई। सिनेमा को उसकी आवाज मिली। 1931 में आर्देशिर ईरानी द्वारा बनायी गयी फिल्म 'आलम आरा' प्रदर्शित हुई। यह भारत की पहली बोलती फिल्म थी। फिल्मों में जब से आवाज जुड़ी फिल्में बहुआयामी भावावस्थाओं को प्रदर्शित करने में अन्य कलाओं की तुलना में ज्यादा कामयाब हुई।

हिंदी सिनेमा के विकास के चौथे दशक के दौरान फिल्मों में दलित दृष्टिकोण से बनने वाली कुछ फिल्में नज़र आने लगी। इस दृष्टि से बनने वाली पहली फिल्म फ्रेंज ऑस्टिन की 'अछूत कन्या' मानी जाती है। मुख्यधारा सिनेमा में इससे पहले भी दलित पात्र के प्रसंग मिलते हैं परंतु फ्रेंज ऑस्टिन की 'अछूत कन्या' में दलित चरित्र सहायक की भूमिका में नहीं बल्कि मुख्य पात्र की भूमिका में नजर आता है।

इस शोध अध्ययन में शामिल फिल्में भारतीय कथा साहित्य के आधार पर बनी ऐसी फिल्में है जो किसी न किसी रूप में दलित जीवन की समस्याओं, उनके संघर्षों और उनकी चेतना जागरण से संबंधित है। भारतीय कथा साहित्य के आधार पर बनने वाली इन

फिल्मों में हिंदी प्रदेशों के अलावा देश के अन्य हिस्सों के दलितों की स्थिति पर भी इससे प्रकाश पड़ता है। शोध में शामिल फिल्में देश की अलग–अलग सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश में दलितों की समस्याओं से भी हमें परिचित कराती है।

दलित चेतना पर लिखी गयी इन रचनाओं एवं इन पर बनायी गयी फिल्मों का मुख्य उद्देश्य दलितों की समस्याओं व गैर दलित समाज द्वारा उनके साथ किये जा रहे भेदभाव को भी उजागर करना है। इन रचनाओं ने दलित समाज को जागरूक करने का भी काम किया है। चूंकि फिल्में आम जनमानस को आसानी से प्रभावित करती है एवं इसका दायरा साहित्य की तुलना में ज्यादा विस्तृत है; इसलिए भी फिल्में आसानी से ऐसे सामाजिक सुधारों में अपना योगदान देती हैं। दलित चेतना से समृद्ध फिल्में दलितों को उनके अधिकारों के प्रति भी जागरूक करती है एवं उनके जीवन में सकारात्मक सुधार की संभावना भी बनाती है।

दलित विमर्श व दलित वैचारिकी के प्रसार ने साहित्यिक आयाम को कई कोणों से प्रभावित किया। दलित लेखकों के साथ गैर दलित लेखकों ने भी इस विषय पर लिखना आरंभ किया। हालाँकि गैर दलित लेखकों के लेखन पर हमेशा प्रतिबद्धता संबंधी सवाल खड़े किये जाते रहे हैं। परंतु शुरूआती दलित चेतना के कई संकेत इन गैर दलित लेखकों के लेखन में भी मिलते हैं। दलित चेतना से संबंधित ये फिल्में कुछ खामियों के साथ आगे आने वाली फिल्मों के लिए कसौटी साबित होगी। इन फिल्मों में दलित चेतना अपने बहुआयामी दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत हुई है व दलित समाज की समस्याओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत कर सकी है।